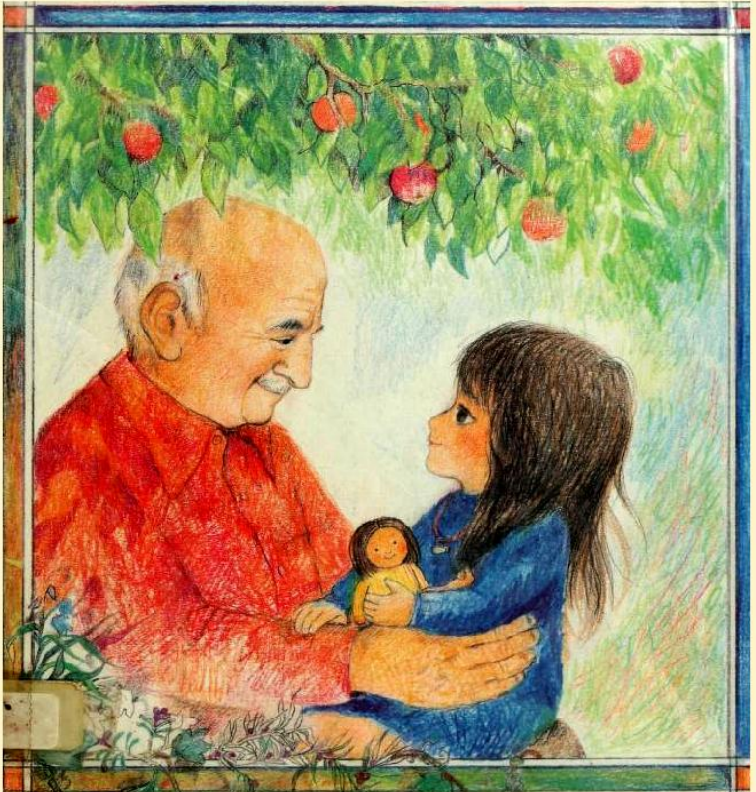


# सिर्फ वो दोनों



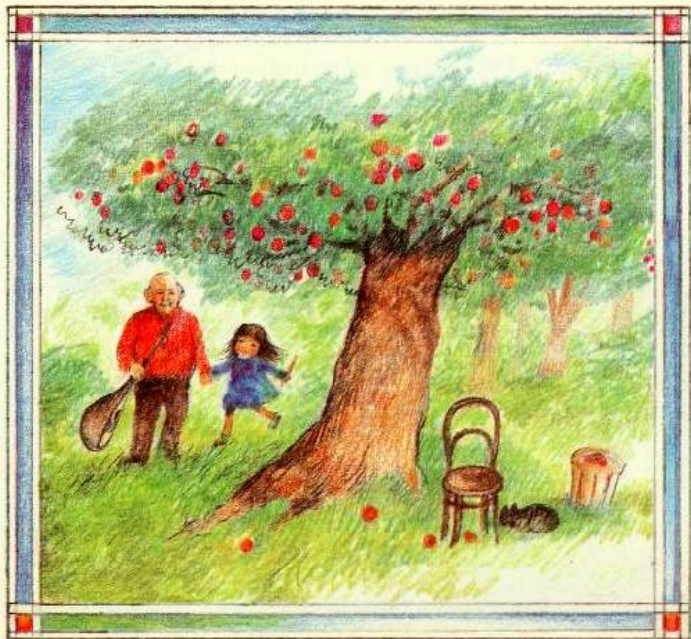
अलीकी, हिंदी: विदूषक

“जिस दिन वो बच्ची पैदा  
हुई उसी दिन दादाजी ने उसके  
लिए चांदी की एक अंगूठी  
बनवाई, जिसमें एक नग जड़ा  
था. क्योंकि वो उस बच्ची से  
बेहद प्यार करते थे.”

इस प्रेम भरी चित्रकथा में  
**अलीकी** दादाजी और उनकी पोती  
के बीच के प्रेम की कहानी  
सुनाती हैं. इस किताब के शब्द  
और चित्र, हरेक के दिल को  
ज़रूर छुएंगे.

फिर हर पीढ़ी इस किताब  
को पढ़ना चाहेगी.

# सिर्फ वो दोनों



अलीकी, हिंदी: विदूषक





जिस दिन वो बच्ची पैदा हुई  
उसी दिन दादाजी ने उसके लिए  
चांदी की एक अंगूठी बनवाई,  
जिसमें एक नग जड़ा था. क्योंकि  
वो उस बच्ची से बेहद प्यार करते  
थे. किसी दिन वो अंगूठी उसकी  
उंगली में ज़रूर फिट आएगी.

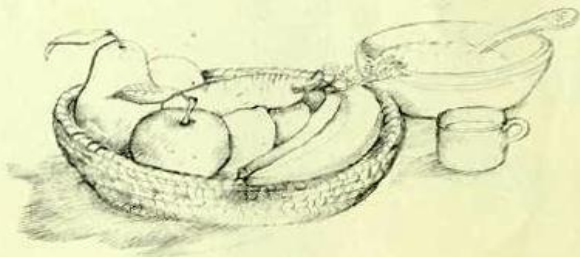
दादाजी ने उसके नाप का  
एक पलंग बनवाया. उन्होंने  
उसे गर्म रखने के लिए गुलाब  
की कलियों की छाप का एक  
कम्बल बनवाया.

दादाजी उसे बालगीत  
सुनाते जो बच्ची को बिल्कुल  
भी समझ में नहीं आते.



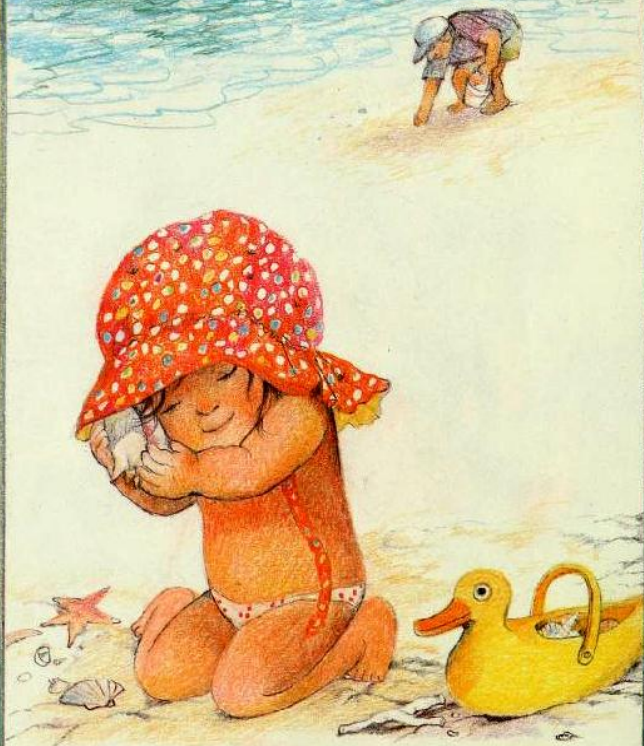


वो बाहर की दुकान से बच्ची  
के लिए खाना लाते जिससे वो  
जल्दी से बड़े और बड़ी हो. जब  
बच्ची ने अपने पहले कदम रखे  
तो दादाजी ने गिरने से बचाने के  
लिए उसका हाथ पकड़ा.









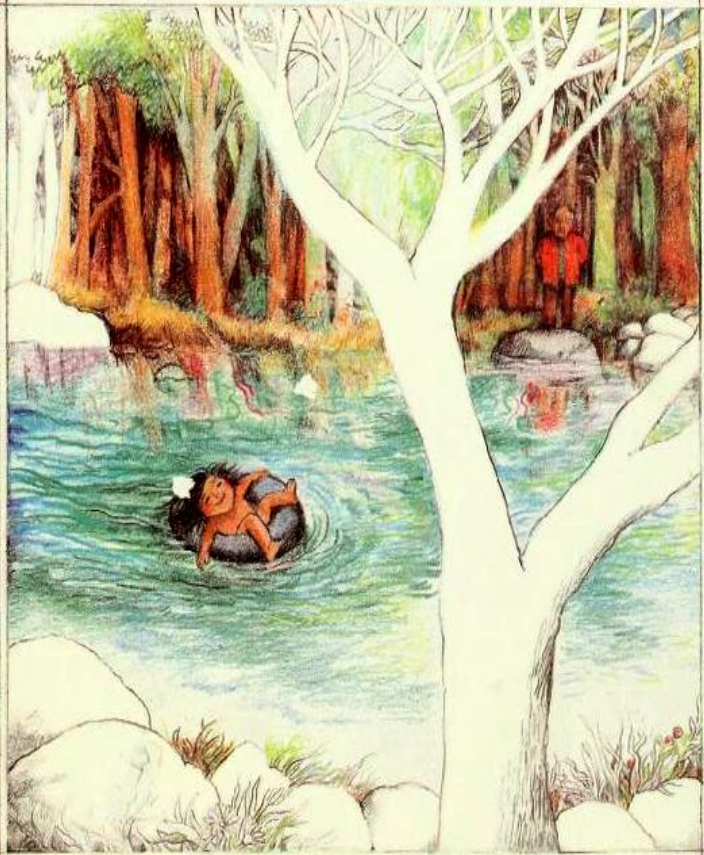
गर्मियों में दोनों समुद्र में तैरते  
और शंख-सीपियाँ इकट्ठी करते. जब  
बचची रेत में किला बनाती तो दादाजी  
दूर से एक बड़ी छतरी ने नीचे बैठे  
हुए उसे निहारते.

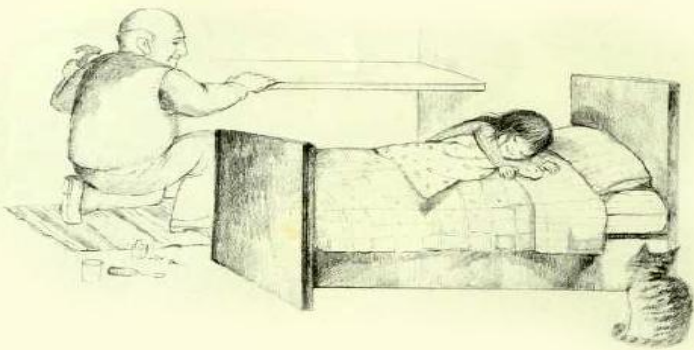


कभी-कभी वो साथ मिलकर पहाड़ियां  
चढ़ते या फिर जंगल की सैर करते. वहां साफ़  
पानी के नाले में बच्ची रबर के एक टायर में  
बैठकर बहते पानी के साथ नीचे आती.





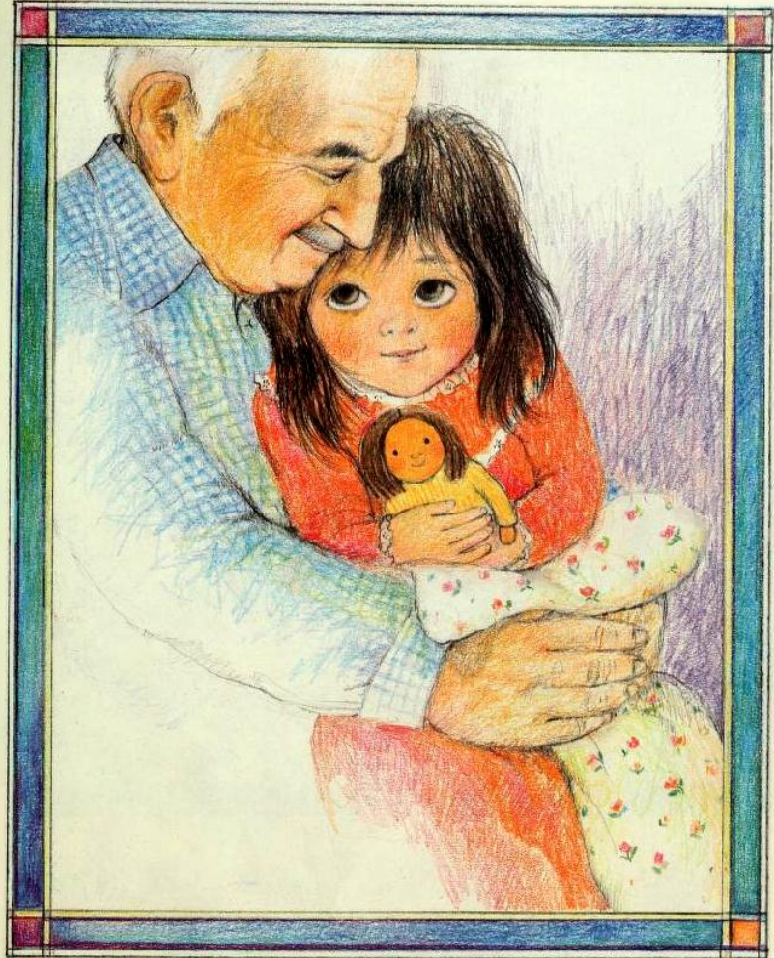




जब पलंग बच्ची के लिए छोटा हुआ तो दादाजी ने उसके लिए एक बड़ा पलंग बनाया. उन्होंने उसकी पढ़ने की किताबों के लिए एक लकड़ी का शेल्फ भी बनाया. उसके खेलने के लिए दादाजी ने एक गुड़िया भी बनाई.

दादाजी उसे बच्ची को गीत सुनाते. उस बच्ची को वो कहानियां सुनाते, जो खुद उन्होंने अपने बचपन में सुनी थीं. कुछ कहानियां वो अपने मन से बनाते. कुछ कहानियां बच्ची के प्रति उनके प्रेम के बारे में होतीं.

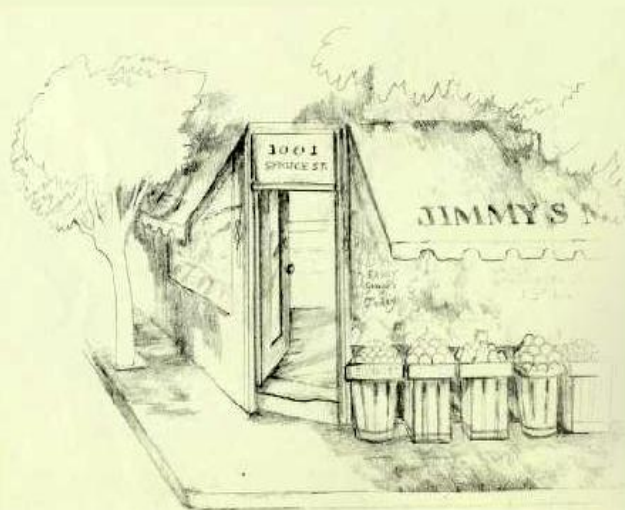


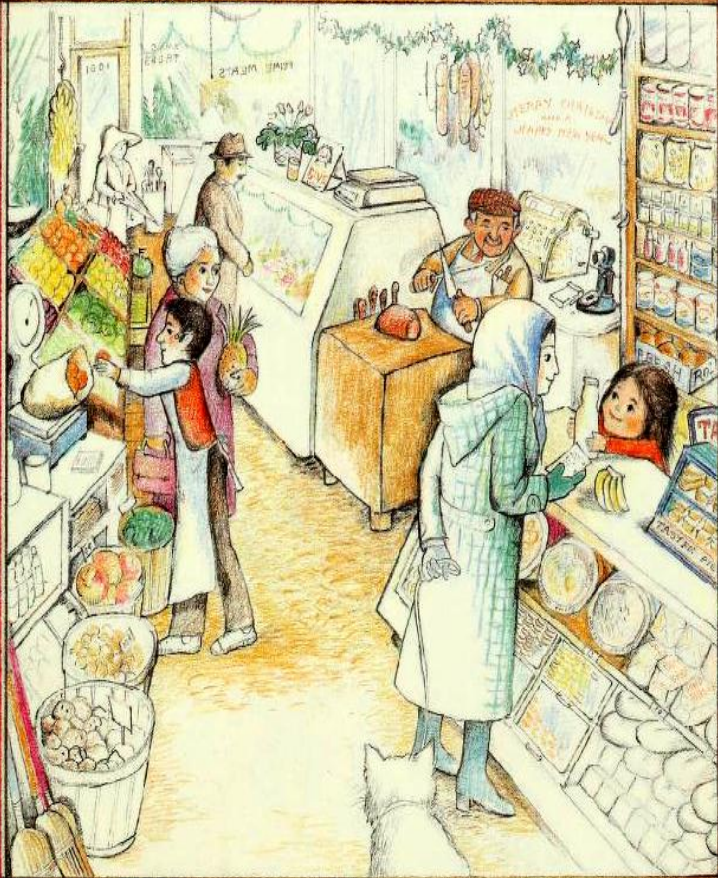


कुछ बड़ी होने के बाद बच्ची, दादाजी की दुकान में, उनकी मदद करने लगी.

बारिश में लोग फिसले नहीं इसलिए दादाजी फर्श पर लकड़ी का बुरादा डालते थे.

बच्ची को गीले बुरादे की खुशबू बहुत पसंद आती थी.





कभी-कभी बच्ची ग्राहकों को कुछ ज्यादा पैसे  
वापिस लौटा देती थी.

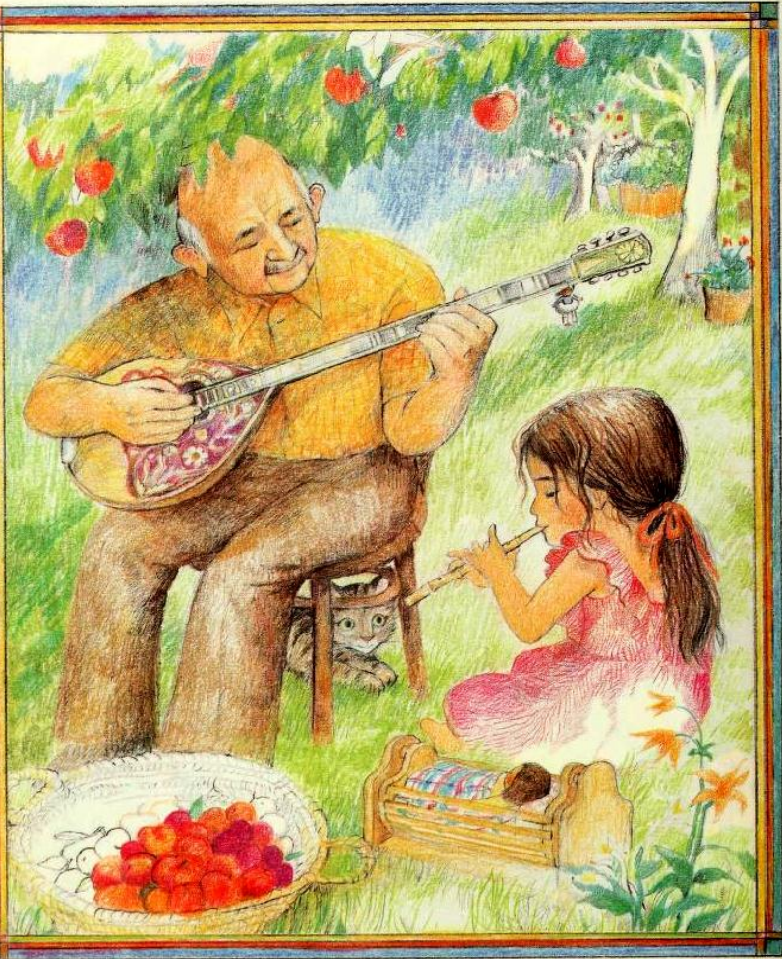
पर दोपहर को गर्मागर्म सूप पीते वक्त दोनों  
लोग उस बात का खूब मज़ाक बनाते थे.

क्योंकि छोटी बच्ची ने अभी-अभी तो गिनती  
सीखी थी.











कुछ समय बाद दादाजी ने अपनी दुकान बंद कर दी,  
फिर उन्होंने अपने बगीचे में फल उगाना शुरू किए.  
फिर दोनों मिलकर पेड़ों से सेब, प्लम और टमाटर  
तोड़ते थे.

अब उनके पास पहले के मुकाबले ज्यादा वक्त होता था.

उसके बाद दादाजी ने बच्ची की गुड़िया के लिए एक  
पालना बनाया, उन्होंने बच्ची के लिए बांस की बांसुरी  
बनाई.

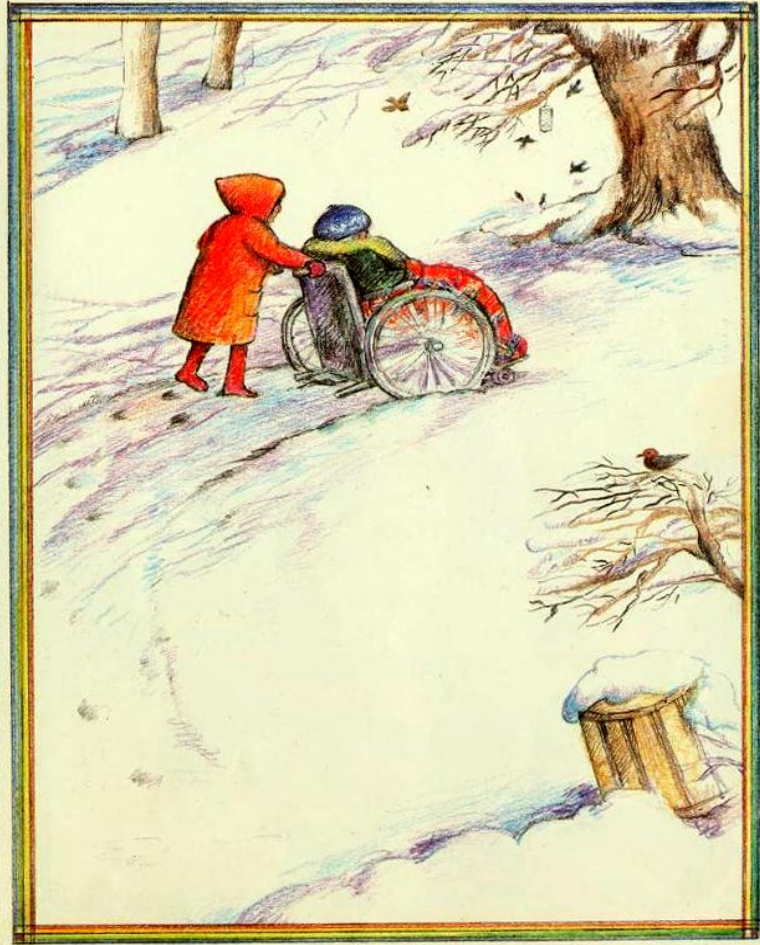
फिर दोनों पेड़ों के नीचे बैठकर, साथ मिलकर संगीत  
की धुनें बजाते थे.

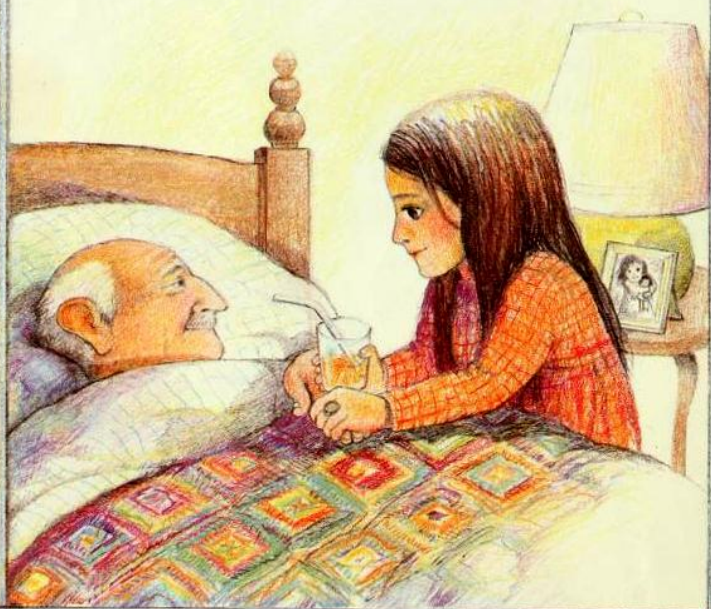
हर साल बच्ची, दादाजी की बनाई चीज़ों से ज्यादा  
अपने दादाजी से प्यार करती थी.

इस तरह समय बीतता गया,  
फिर एक दिन लड़की की ऊँगली में वो चांदी की अंगूठी  
फिट बैठने लगी. अचानक दादाजी बहुत बूढ़े लगने लगे.  
एक रात वो बहुत बीमार हुए, और उसके बाद उनका  
एक हिस्सा हमेशा के लिए हिलना बंद हो गया.



तब छोटी बच्ची अपने दादाजी की व्हील-चेयर को  
बगीचे में ले जाती.  
वो दादाजी को सेब काट कर खिलाती और उन्हें  
गिलास में पीने को जूस देती.





रात को वो दादाजी को पलंग पर सुलाती,

और उन्हें लोरियां गाकर सुनाती,

वो दादाजी की कहानियों, उन्हें दुबारा सुनाती.

कुछ कहानियां वो अपने मन से बनाती - जैसे  
गर्म सूप की, रेत के किले की, और ठण्डे पानी में  
रबर टायर पर तैरने की.

कुछ कहानियां दादाजी के प्रति उसके प्रेम के  
बारे में होतीं.

रात को वो दादाजी से कहती, “शुभ रात्रि  
पपोली,”

फिर दादाजी उसे जवाब में एक पुच्छी देते.

बच्ची को पता था कि एक दिन दादाजी नहीं रहेंगे.

पर जब दादाजी का देहांत हुआ,

तब बच्ची उसके लिए तैयार नहीं थी.

उसे उसका बेहद अफ़सोस हुआ.

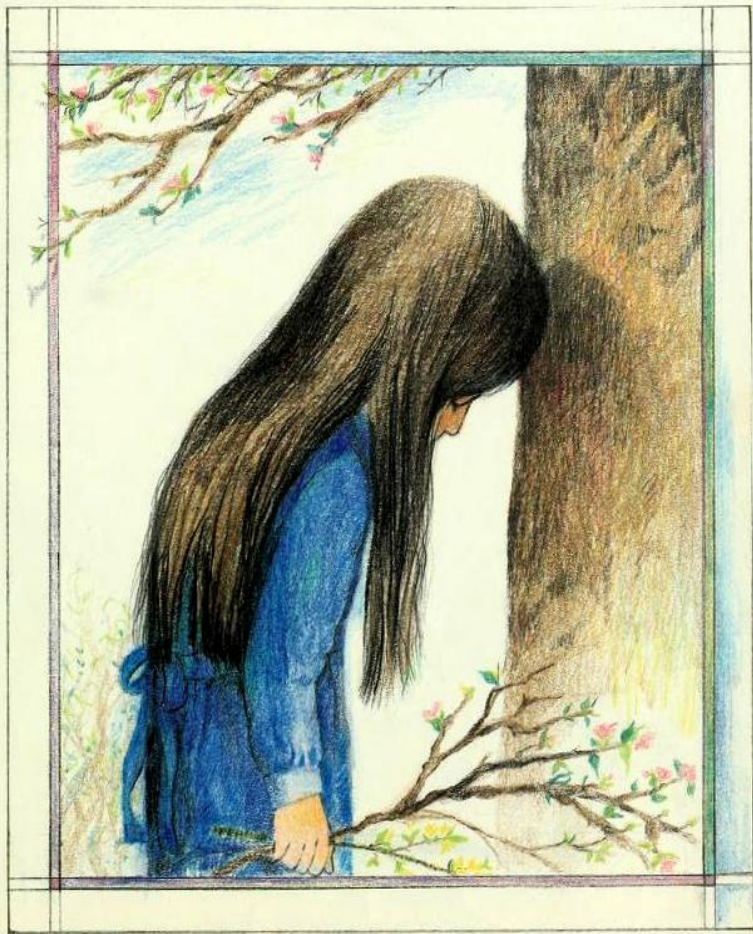
वसंत का मौसम था.

उसने पेड़ों से खुशबूदार फूल तोड़कर दादाजी को दिए.

फिर उसने कहा, ““शुभ रात्रि पपोली, सदा के लिए,”

पर इस बार दादाजी ने उसका कोई जवाब नहीं दिया.





सेब के फूल अब फल बन गए थे.

सेब पेड़ पर लटके रहे. उन्हें किसी ने नहीं तोड़ा था.

फिर बच्ची ने उन्हें तोड़ा, क्योंकि दादाजी को सेबों का ज़मीन पर गिरना और सड़ना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता.

उसने पेड़ के बारे में सोचा,

पेड़ कभी एकदम नंगा, कभी फूलों से भरा,

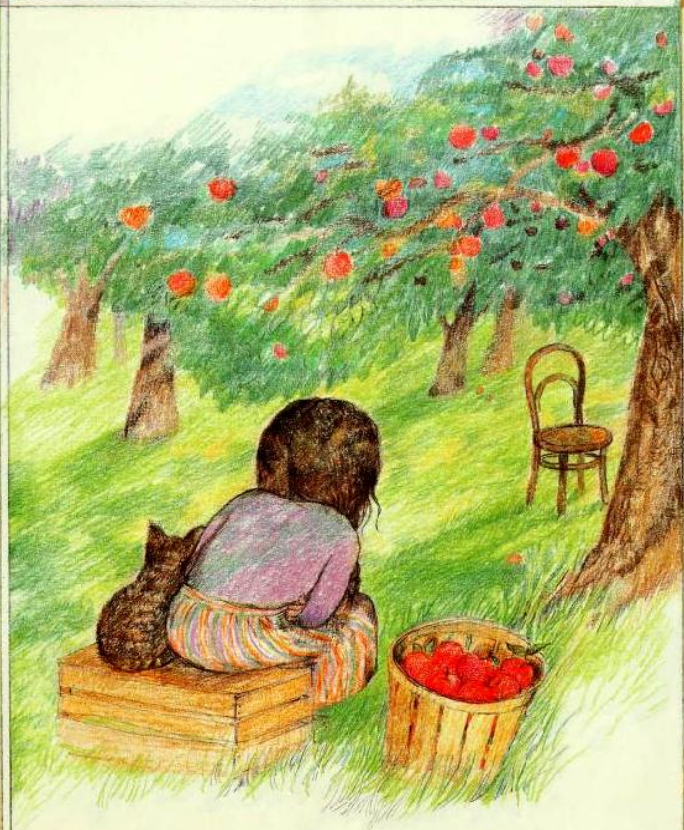
और कभी तोड़ने के तैयार सेबों से लदा होता.

पेड़ मौसम के साथ-साथ, अपना रंग-रूप बदलता था.

बार-बार, लगातार.

वो वहीं होगी. वो पेड़ को बढ़ते हुए देखेगी,

वो उसके फल तोड़ेगी और पुरानी स्मृतियाँ याद करेगी.





**अलीकी** ने बच्चों की  
अनेकों मनपसंद किताबें  
लिखी हैं और उनके लिए  
चित्र बनाये हैं.

इनमें **द ट्वेल्व मंथ्स,**  
**एट मैरी ब्लूम्स, थ्री गोल्ड**  
**पीसेज और कीप योर माउथ**  
**शट** शामिल हैं. उन्होंने अपने  
पति फ्रान्ज़ ब्रांडइनबर्ग के  
साथ मिलकर भी बहुत सी  
किताबें लिखी हैं.